प्रयागराज जागरण

जहां सामाजिक विज्ञान होता असफल वहां साहित्य करता है मार्गदर्शन

- पंत संस्थान में आयोजित साहित्यिक संगोष्ठी में आए महत्वपूर्ण विचार
- विजयदेव नारायण साही, अमृत राय के लेखन से शहर को किया रेखांकित

संसू, झूंसी : शहर को देखना हो तो साहित्य बेहतर मंच है। सामाजिक विज्ञान जहां असफल होने लगता है वहां साहित्य मार्गदर्शन करता है। विजय देव नारायण साही और अमृत राय ने शहर इलाहाबाद (अब प्रयागराज) को समझने और समझाने में अपने साहित्य के जरिए विशेष योगदान दिया। गोविंद वल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान झूंसी में जुटे साहित्यकारों ने कुछ ऐसे ही विचार व्यक्त किए। आचार्य नंद किशोर ने कहा कि साहित्य किसी देश की आत्मकथा भी है। उसे एक अनुभूत यथार्थ की तरह देख सकते हैं। कोई कविता ऐसी होती है जो लंबे कालखंड का दर्शन करा देती है। विजय देव नारायण साही को नंदकिशोर ने ऐसा ही कवि बताते हुए रेखांकित किया।

संस्थान के निदेशक प्रो. बद्री नारायण ने कहा कि साहित्य एक बेहतर मन देता है, कल्पना शक्ति बढ़ाता है। राग दरबारी भारतीय समाज को समझने का महत्वपूर्ण लेख है। चित्तरंजन मिश्र ने विचार और आचार के मेल से संस्कृति के निर्माण को परिभाषित किया। कहा कि इसे विचारों के आलोक में देखें तो साही के भीतर यह प्रकिया एक उठान पैदा करती है।

प्रो. अनीता गोपेश ने स्मृतियों के जरिए शहर की विचार संस्कृति बताई। कहा कि उन्होंने स्वयं जो शहर पाया वह सहज ही उपलब्ध था। वह एक महत्वपूर्ण वैचारिक समय था। उन्होंने अमृत राय, रामस्वरूप चतुर्वेदी, नामवर सिंह, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, नरेश मेहता, अमरकांत, उपेंद्र नाथ अश्क, शेखर जोशी के साहित्य से भी शहर के निर्माण की व्याख्या की। श्रीप्रकाश मिश्र ने प्रयागराज की संस्कृति को समझने के लिए इसके उत्थान के चरणों को देखने की आवश्यकता बताई। कहा कि पहला चरण है स्वतंत्रता मिलने के पूर्व का, जिसमें वणिक थे बाद में इसमें बंगाली, मराठी और अन्य समुदाय के लोग अलग-अलग तरह की संस्कृति को लेकर आए।

बताया कि इस शहर की राजनीतिक संस्कृति के निर्माण में नेहरू, लोहिया आदि नेताओं आदि का योगदान अहम रहा। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के पौत्र विवेक निराला ने विजय देव नारायण साही के लोकतंत्र की कसौटियों को रेखांकित किया। अनिल त्रिपाठी ने कहा कि विजय देव नारायण साही ने जायसी पर जो महत्वपूर्ण कार्य किया वह सहिष्णुता के मूल्यों की खोज थी। डा. अर्चना सिंह और साहित्य अकादमी के कुमार अनुपम ने धन्यवाद ज्ञापित किया।